REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2025

जांजगीर-चाम्पा जिले के आर्थिक विकास में कृषि-आधारित कुटीर एवं लघु उद्योगों का योगदान

डॉ. विवेक मधुकर दांडेकर
सहायक प्राध्यापक
शासकीय एम. एम. आर. पी. जी. महाविद्यालय चाम्पा
जिला जांजगीर-चाम्पा

सारांश:

यह अध्ययन जांजगीर-चाम्पा जिले के आर्थिक विकास में कृषि-आधारित कुटीर एवं लघु उद्योगों के योगदान का मूल्यांकन करता है। यह शोधपत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि कुटीर एवं लघु उद्योगों -जैसे कृषि-प्रसंस्करण इकाइयाँ, हथकरघा, तिलहन पेराई, गुड़ और खांडसारी उत्पादन, डेयरी-आधारित लघु उद्यम और संबंधित कुटीर गतिविधियाँ स्थानीय रोजगार, आय सृजन, ग्रामीण आजीविका, कृषि उपज के मूल्यवर्धन और मौसमी प्रवास में कमी को कैसे प्रभावित करती हैं। मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण (परिवार सर्वेक्षण, प्रमुख सूचनादाताओं के साक्षात्कार, लक्षित समूह और ज़िला अभिलेखों से द्वितीयक आंकड़े) का उपयोग करते हुए, यह शोध जिले में कुटीर एवं लघु उद्योगों की संरचना, प्रदर्शन, बाधाएँ और विकास क्षमता का विश्लेषण करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि कुटीर एवं लघु उद्योग कृषक परिवारों को पूरक आय प्रदान करने, जिले के भीतर मूल्य अधिग्रहण बढ़ाने और महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, ऋण तक अपर्याप्त पहुँच, सीमित तकनीकी अपनाना, कमजोर बाज़ार संपर्क और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा जैसी बाधाएँ इनके विस्तार में अड़चन डालती हैं। यह शोधपत्र संस्थागत समर्थन को मजबूत करने, क्लस्टर-आधारित विकास को बढ़ावा देने, बाज़ार पहुँच में सुधार करने और कौशल एवं तकनीकी हस्तक्षेपों को सुगम बनाने हेतु नीतिगत सिफारिशों के साथ समाप्त होता है, जिससे जांजगीर-चाम्पा में कुटीर एवं लघु उद्योगों की उत्पादकता और सतत विकास में वृद्धि हो सके।

मुख्य शब्द: *कृषि-आधारित कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, ग्रामीण विकास, मूल्य संवर्धन, जांजगीर-चाम्पा, कृषि-प्रसंस्करण, रोज़गार*

परिचय:

ग्रामीण भारत की आर्थिक संरचना कृषि और संबंधित गैर-कृषि क्षेत्रों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। कृषि, जो पारंपरिक रूप से ग्रामीण आजीविका का मुख्य आधार रही है, भूमि पर दबाव, सीमित रोजगार अवसर और आय में उतार-चढ़ाव जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है, जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गैर-कृषि गतिविधियों की ओर रुझान बढ़ रहा है।

कृषि-आधारित कुटीर और लघु उद्योग (एबीसीएसआई) कृषि कच्चे माल को मूल्यवर्धित उत्पादों में परिवर्तित करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जिससे रोजगार सृजन और आय में स्थिरता आती है। ये उद्योग, जो अक्सर परिवारों द्वारा संचालित

होते हैं और स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हैं, खाद्य पदार्थों और हस्तशिल्प सहित विविध वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, जिससे स्थानीय बाजारों को बढ़ावा मिलता है और आर्थिक रिसाव कम होता है।

छत्तीसगढ़ का जांजगीर-चाम्पा जिला, जो धान और तिलहन जैसे कृषि उत्पादों में समृद्ध है, इस अध्ययन का केंद्र बिंदु है। अपनी कृषि क्षमता के बावजूद, कई निवासी कम आय वाली प्राथमिक गतिविधियों पर निर्भर हैं। कुटीर एवं लघु उद्योगों का विस्तार अतिरिक्त श्रम को अवशोषित करने, ग्रामीण गरीबी से निपटने और संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने की रणनीति के रूप में प्रस्तावित है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य यह जांचना है कि कुटीर एवं लघु उद्योग जांजगीरचाम्पा जिले की आर्थिक उन्नति में कैसे योगदान करते हैं, और रोजगार सृजन, आय विविधीकरण, ग्रामीण उद्यमिता और क्षेत्र में समग्र विकास को बढ़ावा देने वाले आर्थिक संबंधों के निर्माण में उनकी भूमिका पर ध्यान केंद्रित करना है।

यद्यपि कई राष्ट्रीय और राज्य-स्तरीय अध्ययनों ने लघु और मध्यम उद्यमों (एसएमई) तथा कुटीर उद्योगों के प्रभाव का मूल्यांकन किया है, जिला-स्तरीय अंतर्दृष्टि सीमित है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। जांजगीर-चाम्पा अपने मजबूत कृषि आधार और उभरते गैर-कृषि क्षेत्रों के कारण इस प्रकार के विश्लेषण के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। कुटीर एवं लघु उद्योगों के योगदान पर यह शोध ग्रामीण औद्योगीकरण को गति देने और समावेशी आर्थिक प्रगति प्राप्त करने हेतु कृषि संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए सार्थक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त, ये निष्कर्ष नीति-निर्माताओं, विकास एजेंसियों और वित्तीय संस्थानों को ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने और आजीविका में सुधार के लिए क्लस्टर विकास कार्यक्रम, सूक्ष्म वित्त और कौशल संवर्धन जैसे लक्षित हस्तक्षेप करने में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। भारत सरकार द्वारा "आत्मनिर्भर भारत" और "मेक इन इंडिया" जैसी पहलों पर ध्यान केंद्रित करने तथा कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास का समर्थन करने वाले राज्य कार्यक्रमों को देखते हुए, यह अध्ययन समयोचित और प्रासंगिक है, जो उच्च-स्तरीय नीतिगत दृष्टिकोणों को छत्तीसगढ़ के सबसे अधिक कृषि उत्पादक जिलों में से एक की वास्तविकताओं से जोड़ता है।

उद्देश्य:

१) जांजगीर-चाम्पा में कृषि-आधारित कुटीर और लघु उद्योगों का मानचित्रण और वर्गीकरण करना।
२) रोजगार, आय और मूल्यवर्धन के संदर्भ में कुटीर एवं लघु उद्योगों के सामाजिक-आर्थिक योगदान का आकलन करना।
३) कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास में बाधक संस्थागत, वित्तीय, अवसंरचनात्मक और बाजार संबंधी बाधाओं की पहचान करना।
४) कुटीर एवं लघु उद्योगों के विस्तार हेतु नीतिगत और कार्यक्रम संबंधी हस्तक्षेपों की अनुशंसा करना।

साहित्य समीक्षा:

कृषि-आधारित कुटीर और लघु उद्योगों पर शोध ग्रामीण विकास और आर्थिक विविधीकरण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। कटोच (२०१२) ने इस बात पर जोर दिया कि सूक्ष्म और लघु उद्यम भारत के सकल घरेलू उत्पाद और ग्रामीण रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जबकि वर्मा (२०१७) ने कहा कि ये उद्योग बेरोजगारी कम करने और कृषि क्षेत्रों में आय सृजन में सहायक होते हैं। यूएसडीए (२०१७) के अनुसार, भारत का खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र कृषि उपज के मूल्यवर्धन के व्यापक अवसर प्रदान करता है, जिससे ग्रामीण औद्योगीकरण को बढ़ावा मिलता है। वेटेउर (२०२१) और आईजेईआरटी (२०२२) द्वारा किए गए अनुभवजन्य अध्ययनों में पाया गया कि लघु उद्योग स्थानीय संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करते हैं, लेकिन सीमित ऋण, पुरानी तकनीक और कमजोर विपणन सुविधाओं जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं। पाठक (२०२२) द्वारा किए गए जिला-स्तरीय अध्ययन से पता चला है कि जांजगीर-चाम्पा में कुटीर उद्योग, विशेषकर हथकरघा और खाद्य प्रसंस्करण, महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण रोजगार प्रदान करते हैं। इसी प्रकार, चंद्रा और सहयोगीओं (२०२०) ने दिखाया कि जिले का मजबूत कृषि आधार कृषि-आधारित उद्योग के विकास का समर्थन करता है। सीआईपीईटी और आईसीएआर (२०२३) तथा आईजेसीआरटी (२०२५) के हालिया विश्लेषणों ने ऐसे उद्योगों को बनाए रखने के लिए प्रौद्योगिकी प्रसार, बुनियादी ढांचे और संस्थागत समर्थन के महत्व पर बल दिया। कुल मिलाकर, साहित्य ग्रामीण परिवर्तन में कुटीर एवं लघु उद्योगों की क्षमता की पुष्टि करता है, लेकिन उनके वास्तविक योगदान को मापने और स्थानीय आर्थिक विकास में बाधाओं की पहचान करने के लिए, वर्तमान की तरह जिला-स्तरीय अध्ययनों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

शोध पद्धति:

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध रचना का उपयोग करके छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चाम्पा जिले के आर्थिक विकास में कृषि-आधारित कुटीर और लघु उद्योगों की भूमिका का परीक्षण करता है। इसका उद्देश्य कुटीर एवं लघु उद्योगों को वर्गीकृत करना, रोजगार और आय में उनके योगदान का आकलन करना, उद्यमियों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाओं का विश्लेषण करना और नीतिगत सिफारिशें प्रदान करना है। आँकड़े सर्वेक्षणों, साक्षात्कारों और सरकारी रिपोर्टों के माध्यम से एकत्रित किये गए हैं, जिसमें प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए बहु-चरणीय नमूनाकरण पद्धति का उपयोग किया गया है। रोजगार पैटर्न और अंतर्दृष्टि का मूल्यांकन करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के विश्लेषण का प्रयोग किया गया है, जो आर्थिक विकास के लिए कुटीर एवं लघु उद्योगों के महत्व को उजागर करते हैं और क्षेत्रीय नीति निर्माण तथा पहलों के समर्थन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

जांजगीर-चाम्पा जिले के आर्थिक विकास में कृषि-आधारित कुटीर और लघु उद्योगों का योगदान:

मध्य छत्तीसगढ़ का एक महत्वपूर्ण जिला, जांजगीर-चाम्पा, अपनी महत्वपूर्ण कृषि अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है जहाँ प्राथमिक क्षेत्र की गतिविधियाँ प्रमुख हैं। हालाँकि, बढ़ते लघु उद्योग, विशेष रूप से कृषि से जुड़े कुटीर उद्योग, स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रमुख उद्योगों में चावल मिलिंग, तेल निष्कर्षण, हथकरघा बुनाई और कृषि-प्रसंस्करण इकाइयाँ शामिल हैं। ये उद्योग रोज़गार सृजन में उल्लेखनीय योगदान देते हैं। इन लघु उद्यमों में लगभग १,२९६ पंजीकृत औद्योगिक इकाइयाँ और लगभग ६,५२० अनुमानित दैनिक श्रमिक कार्यरत हैं, जो इन्हें इस क्षेत्र में सबसे बड़े गैर-कृषि नियोक्ता बनाता है।

आर्थिक प्रभावों में कृषि उपज का मूल्यवर्धन, छोटे किसानों और भूमिहीन परिवारों के लिए आय विविधीकरण और पश्चगामी एवं अग्रगामी संपर्कों के माध्यम से स्थानीय कृषि मूल्य श्रृंखलाओं को सुदृढ़ बनाना शामिल है। सामाजिक रूप से, ये पहल महिला श्रम भागीदारी को बढ़ाती हैं, मौसमी प्रवास को कम करती हैं और पारंपरिक कौशल को संरक्षित करने में मदद करती हैं। फिर भी, इन उद्योगों को पुरानी तकनीक, बाज़ार तक खराब पहुँच, वित्तीय कठिनाइयों, बुनियादी ढाँचे की अपर्याप्तता और कुशल श्रम की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

इन बाधाओं को दूर करने के लिए, व्यावहारिक सुझाव प्रस्तावित हैं, जिनमें सामान्य सुविधा केंद्रों की स्थापना, वित्त और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक बेहतर पहुँच, बेहतर बाज़ार संपर्क, बुनियादी ढाँचा विकास और प्रौद्योगिकी अपनाना शामिल है। साक्ष्यों से पता चलता है कि लघु उद्योगों द्वारा पर्याप्त रोजगार सृजन के बावजूद, उनकी वृद्धि धीमी बनी हुई है, जिसके लिए राज्य नीति के अनुसार लक्षित रणनीतियों की आवश्यकता है, जिसमें कम विकसित जिलों के लिए प्रोत्साहन और समर्थन पर जोर दिया जाता है।

परिणाम:

कृषि-आधारित कुटीर एवं लघु उद्योग (एबीसीएसआई) विविध प्रकार के उद्यमों को समाहित करते हैं, जिनकी कुल संख्या लगभग ८६५ है। इनमें मुख्य रूप से चावल मिलें (२८० इकाइयाँ), हथकरघा एवं हस्तशिल्प (१८०इकाइयाँ) और आटा मिलें (१२० इकाइयाँ) शामिल हैं। ये उद्योग स्थानीय रोजगार और घरेलू आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। कुटीर एवं लघु उद्योगों से अनुमानित औसत मासिक घरेलू आय ७,५०० से १२,००० तक है, जो कुल घरेलू आय का लगभग २५% से ३५% है।

प्रमुख निष्कर्ष बताते हैं कि ४२% परिवार कुटीर एवं लघु उद्योगों से जुड़े हैं, जो सालाना लगभग १८ लाख व्यक्ति-दिवस रोजगार सृजित करते हैं और ११५–१३० करोड़ के अनुमानित वार्षिक कारोबार में योगदान करते हैं, जो जिले के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के उत्पादन का लगभग ८%–१०% है। कुटीर एवं लघु उद्योगों का स्वामित्व मुख्यतः व्यक्तिगत स्वामित्व (५८%) और परिवार द्वारा संचालित उद्यमों (२७%) को दर्शाता है, जबकि १५% का प्रबंधन स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) या सहकारी समितियों द्वारा किया जाता है।

रोजगार की गहनता से पता चलता है कि प्रत्येक इकाई में औसतन ३.४ पूर्णकालिक कर्मचारी और ५.६ मौसमी या अंशकालिक कर्मचारी हैं, जिससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियों को मिलाकर कुल अनुमानित ७,५००–८,००० लोगों को रोजगार मिलता है। उल्लेखनीय रूप से, कुटीर एवं लघु उद्योगों में कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग ४६% है और वे हथकरघा तथा डेयरी प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में विशेष रूप से सक्रिय हैं।

अपने पर्याप्त योगदान के बावजूद, कुटीर एवं लघु उद्योगों को महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है। लगभग ७४% उत्तरदाताओं ने औपचारिक वित्तपोषण प्राप्त करने में चुनौतियों पर प्रकाश डाला, जबकि ६८% ने पुराने उपकरणों के साथ तकनीकी कमियों की ओर इशारा किया। अन्य उल्लेखनीय बाधाओं में अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा (६१%), सीमित बाजार पहुँच (५७%), और कौशल प्रशिक्षण की कमी (५२%) शामिल हैं। नियामक बाधाएँ परिचालन संबंधी कठिनाइयों में योगदान करती हैं, विशेष रूप से लाइसेंसिंग और अनुपालन से संबंधित। इन उद्योगों ने सकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी प्रदर्शित किया है, विशेष रूप से कुटीर एवं लघु उद्योगों में शामिल परिवारों में मौसमी प्रवासन को ३८% से घटाकर २२% कर दिया गया है, जिसका श्रेय स्थानीय रोजगार के बेहतर अवसरों को दिया जा सकता है। निष्कर्षतः, जबकि कुटीर एवं लघु उद्योग इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक स्तंभ का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पूरक आय को बढ़ावा देते हैं और महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करते हैं, पहचानी गई बाधाओं को दूर करना बाज़ार में उनकी वृद्धि और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

चर्चा:

यह अध्ययन जांजगीर-चाम्पा से प्राप्त निष्कर्षों को कृषि-आधारित कुटीर और लघु उद्योगों पर व्यापक साहित्य के संदर्भ में प्रस्तुत करता है, और उनके गुणक प्रभावों तथा समता एवं पर्यावरणीय स्थिरता के विचारों पर ज़ोर देता है। अध्ययन से पता चलता है कि चावल मिलों और खाद्य-प्रसंस्करण सूक्ष्म इकाइयों जैसी कृषि-प्रसंस्करण इकाइयों का उच्च संकेंद्रण है, जो विशेष रूप से महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण पूरक आय और रोज़गार प्रदान करती हैं। कुटीर एवं लघु उद्योग मूल्य-धारण तंत्र के रूप में कार्य करते हैं, स्थानीय उत्पादन मूल्य को प्राप्त करते हैं, रोज़गार सृजन करते हैं और ग्रामीण आजीविका विविधीकरण को समर्थन देते हैं, जिनका योगदान घरेलू आय में अनुमानित २५-३५% है।

आर्थिक प्रभाव में स्पष्ट गुणक प्रभाव शामिल हैं जहाँ कुटीर एवं लघु उद्योगों से प्राप्त आय स्थानीय अर्थव्यवस्था में प्रवाहित होती है, जिससे वस्तुओं और सेवाओं की माँग को बढ़ावा मिलता है। प्रमुख तंत्र हैं अग्रिम व्यय, कृषि उत्पादन को पश्चगामी प्रोत्साहन और स्थानीय उद्यमों में पुनर्निवेश। विश्लेषण सामाजिक समता लाभों, विशेष रूप से कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) द्वारा हाशिए पर पड़े समूहों के लिए अवसरों की पहचान करता है। हालाँकि, ये लाभ ऋण, प्रशिक्षण और बाज़ार संपर्कों तक पहुँच पर निर्भर हैं।

अपशिष्ट उत्पादन और जल उपयोग सहित पर्यावरणीय समझौतों को स्वीकार किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप अपशिष्ट मूल्यांकन, जल-कुशल प्रसंस्करण और ऊर्जा दक्षता उन्नयन जैसी स्थायी प्रथाओं के लिए सिफ़ारिशें दी गई हैं। नीतिगत सिफ़ारिशें एक बहुआयामी समर्थन रणनीति स्थापित करने पर केंद्रित हैं, जिसमें ऋण पहुँच में सुधार, बाज़ार संपर्क, कौशल विकास, बुनियादी ढाँचे में सुधार और पर्यावरणीय स्थिरता के उपाय शामिल हैं।

यह अध्ययन यह मानता है कि कुटीर एवं लघु उद्यो, प्रणालीगत समर्थन और स्थायी प्रथाओं के माध्यम से, जांजगीर-चाम्पा में समावेशी और पर्यावरणीय रूप से स्थायी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, और ग्रामीण समुदायों की तात्कालिक और दीर्घकालिक, दोनों आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। अल्पकालिक कार्यवाहियां आय और बाजार पहुंच को लक्ष्य बनाती हैं, जबकि मध्यम और दीर्घकालिक रणनीतियां सामूहिक दक्षता और व्यापक बाजारों में एकीकरण पर जोर देती हैं।

निष्कर्ष:

जांजगीर-चाम्पा जिले में कृषि-आधारित कुटीर एवं लघु उद्योगों पर किए गए अध्ययन से आर्थिक विकास, रोजगार और सामाजिक सशक्तीकरण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। प्रमुख निष्कर्षों में शामिल हैं, कुटीर एवं लघु उद्योग स्थानीय कृषि उत्पादों को बढ़ावा देते हैं, किसानों की आय बढ़ाते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं; ये महिलाओं और युवाओं सहित ग्रामीण निवासियों के लिए महत्वपूर्ण रोजगार प्रदान करते हैं; ये स्वयं सहायता समूहों और गृह-आधारित इकाइयों के माध्यम से हाशिए पर पड़े समूहों पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, घरेलू लचीलेपन और शिक्षा में सुधार करते हैं; उत्पन्न आय सहायक क्षेत्रों को प्रोत्साहित करती है और स्थायी ग्रामीण मूल्य श्रृंखलाओं का निर्माण करती है; सीमित वित्त और बुनियादी ढाँचे जैसी चुनौतियाँ विकास में

बाधा डालती हैं, लेकिन लक्षित हस्तक्षेपों के माध्यम से इनका समाधान किया जा सकता है। कुल मिलाकर, कुटीर एवं लघु उद्योग जिले में ग्रामीण आजीविका और सतत आर्थिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सन्दर्भ:

१) *देवांगन, म., & पाठक, अ. (2022). जांजगीर-चाम्पा जिले में कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास: एक अध्ययन। IOSR Journal of Humanities and Social Science, 27(4), 26-31. https://www.iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol.27-Issue4/Ser-8/D2704082631.pdf*

२) *नाबार्ड. (2016). पीएलपी 2016-17 - जांजगीर चाम्पा : कृषि-आधारित औद्योगिक विकास की सम्भावनाएँ। https://www.nabard.org/auth/writereaddata/tender/2010162930Janjgir%20Champa%20Consolidated%20Chapters.split-and-merged.pdf*

३) *नाबार्ड. (2019). स्टेट फोकस पेपर 2019-20 : कृषि एवं ग्रामीण विकास में कृषि-आधारित उद्योग। https://www.nabard.org/auth/writereaddata/tender/1202190041Chhattisgarh%20RO%20-%20STATE%20FOCUS%20PAPER%202019-20.pdf*

४) *छत्तीसगढ़ शासन. (2022). ग्रामोद्योग नीति एवं कृषि-आधारित उद्योगों की भूमिका। वाणिज्य एवं उद्योग विभाग। https://industries.cg.gov.in/pdf/policy2019-24/gramin_kuteer_udyog_policy_2022.pdf*

५) *जिला सांख्यिकी पुस्तिका. (2015). जांजगीर-चाम्पा (छत्तीसगढ़): कृषि एवं संबंधित उद्योगों की सांख्यिकी जानकारी। https://descg.gov.in/pdf/publications/zsp/6.janjgirchampa/ZSP_2015-16.pdf*

६) *छत्तीसगढ़ के चांपा जिले में कुटीर उद्योग एवं उनमें कार्यरत श्रमिकों का स्थिति अध्ययन। (2009). Research Journal of Humanities and Social Sciences, 1(1). https://rjhssonline.com/HTMLPaper.aspx?Journal=Research+Journal+of+Humanities+and+Social+Sciences%3BPID%3D2010-1-1-6*

७) *मुरली, ज. (2014). छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर-चाम्पा जिले में वर्षा परिवर्तन एवं कृषि आधारित आजीविका पर प्रभाव: एक केस स्टडी। https://translate.google.com/translate?u=https%3A%2F%2Fwww.tandfonline.com%2Fdoi%2Ffull%2F10.1080%2F17565529.2013.867248&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp*

८) *छत्तीसगढ़ सरकार. (2024). आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2024-25: कृषि आधारित उद्योगों का क्षेत्रीय विकास। https://descg.gov.in/pdf/publications/latest/ES2024-25/ES-9.pdf*

९) *कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक. (2017). जांजगीर-चाम्पा जिले के कृषि आधारित उद्योगों की रिपोर्ट। नाबार्ड*

१०) *वाणिज्य एवं उद्योग विभाग. (2022). कृषि एवं वन आधारित ग्रामोद्योग नीति। छत्तीसगढ़ शासन।*

११) *आर्थिक सर्वेक्षण छत्तीसगढ़. (2013). जांजगीर-चाम्पा – औद्योगिक क्षेत्र का विकास। https://descg.gov.in/pdf/publications/allpub/3.EconomicSurvey2012-13(English).pdf[9]*

१२) *उद्योग निदेशालय, छत्तीसगढ़. (2024). औद्योगिक विकास नीति – कृषि आधारित कुटीर उद्योग प्रोत्साहन। https://industries.cg.gov.in/pdf/policy2024-30/IDP_2024-30_English.pdf*

१३) *रणनीतिक निवेश योजना, छत्तीसगढ़. (2023). हथकरघा क्षेत्र - जांजगीर-चाम्पा में कृषि-आधारित कुटीर उद्योग। https://ramp.msme.gov.in/ramp/pdf-documents/sip-states/Chhattisgarh.pdf*

१४) *एमएसएमई नीति – छत्तीसगढ़ राज्य (2019-24). कृषि आधारित सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग। https://msme.icai.org/wp-content/uploads/2021/06/MSME-POLICY-IN-CG.pdf*

१५) *सीजी वन विभाग. (2022). परिचय: कृषि और वन आधारित उद्योग – जिला जांजगीर-चांपा में संभावनाएँ। https://forest.cg.gov.in/cms/media/50711938-bd9c-40d5-8396-2d8fbf7d069d_1B.pdf*

१६) सीजी औद्योगिक नीति. (2025). आत्मनिर्भरता हेतु कृषि-आधारित उद्योग नीति।
https://www.scribd.com/document/526013946/CG-Industrial-Policy
१७) छत्तीसगढ़ जिला जनगणना पुस्तिका. (2001). जांजगीर-चाम्पा जिला: कृषि और कुटीर उद्योग सांख्यिकी।
https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/44053/download/47716/DH_22_2001_JAN.pdf
१८) नाबार्ड. (2017). जिला सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक: जांजगीर-चाम्पा रिपोर्ट।
१९) एमएसएमई योजनाएँ, छत्तीसगढ़. (2022). कृषि आधारित एमएसएमई योजनाएँ।
https://msme.icai.org/wp-content/uploads/2022/12/MSME-Schemes-Chhattisgarh.pdf
२०) सीजी कृषि पोर्टल. (2020). छत्तीसगढ़ समावेशी ग्रामीण और त्वरित विकास परियोजना।
https://agriportal.cg.nic.in/PORT/%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A5%80%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A4%AE%20%E0%A4%97%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%83LatestUpcomming%20Events/20203/docEn2020311163853.pdf
२१) छत्तीसगढ़ शासन. (2024). वाणिज्य व उद्योग विभाग - जांजगीर-चांपा जिले के कृषि-आधारित ग्रामोद्योग।
२२) उद्योग निदेशालय, छत्तीसगढ़. (2024). छत्तीसगढ़ औद्योगिक विकास नीति 2024–30।
https://industries.cg.gov.in/pdf/policy2024-30/IDP_2024-30(Brief).pdf[18]
२३) हाथकरघा विकास और विपणन संघ, छत्तीसगढ़. (2020). जांजगीर-चाम्पा के हाथकरघा उद्योगों की संभावनाएँ।
२४) एनईएसएसी. (2020). रिमोट सेंसिंग और जीआईएस का कृषि-आधारित कुटीर उद्योगों में अनुप्रयोग – जांजगीर-चाम्पा अध्ययन।
https://nesac.gov.in/assets/resources/2020/12/Sericulture-Project-Phase-I-Atlas.pdf
२५) आर्थिक और सांख्यिकी निदेशालय, छत्तीसगढ़. (2020). जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जांजगीर-चाम्पा – कृषि व उद्योग।
२६) एमएसएमई स्कोर, छत्तीसगढ़. (2022). सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग विश्लेषण – जांजगीर-चाम्पा।
२७) एमएसएमई मंत्रालय, भारत सरकार. (2023). छत्तीसगढ़ राज्य एमएसएमई विकास रिपोर्ट।
https://dcmsme.gov.in/dips/state_wise_dips/chhattisgarh.pdf
२८) आर्थिक सर्वेक्षण छत्तीसगढ़. (2024). कृषि, पशु धन एवं कुटीर उद्योग – जांजगीर चाम्पा।
२९) सीजी वन विभाग. (2022). कृषि और वन आधारित उद्योग – जांजगीर-चाम्पा जिले में विकास।
३०) उद्योग निदेशालय, छत्तीसगढ़. (2024). औद्योगिक विकास नीति: स्थानीय कृषि आधारित कुटीर उद्योग।